सिद्धार्थ और परिणीति ने 5 साल तक साथ में काम न करने की बताई वजह

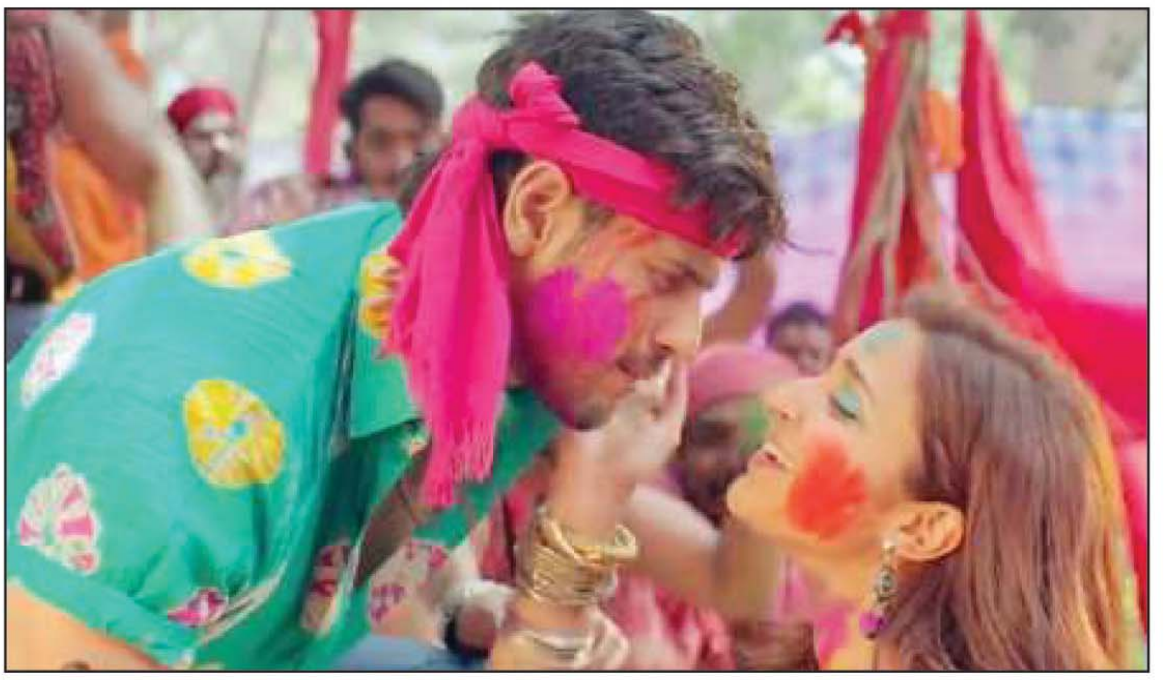

सिद्धार्थ मल्होत्रा और परिणीति चोपड़ा स्टारर फिल्म जबरिया जोड़ी का ट्रेलर लांच बड़े ही अनोखे अंदाज में किया गया। सिद्धार्थ और परिणीति ने बारात व बैंड बाजे के साथ वेन्यू पर एंट्री मारी। सिद्धार्थ और परिणीति पांच साल पहले आई फिल्म हंसी तो फंसी में नजर आए थे, जहां इनकी रोमांटिक कैमिस्ट्री को फैंस ने बहुत पसंद किया था। वहीं फिल्म जबरिया जोड़ी में यह जोड़ी एक नए अंदाज में नजर आ रही है। फिल्म की कहानी बिहार में होने वाले किडनैपिंग कर जबरन शादी पर आधारित है। इस गंभीर मुद्दे को फिल्म में बड़े ही कॉमिक अंदाज में पेश करने की कोशिश की गई है। ट्रेलर लॉन्च के दौरान परिणीति और सिद्धार्थ समेत जावेद जाफरी, चंदन रॉय सान्याल और डायरेक्टर प्रशांत सिंह मौजूद थे।

कुछ अलग करना चाहते थे हम: इवेंट के दौरान जब परिणीति और सिद्धार्थ से पूछा गया कि वह बॉलिवुड के किस एक्टर्स की जोड़ी की जबरन शादी कराना चाहेंगे, तो जवाब में परिणीति ने कहा, वैसे तो काफी सारे नाम मेरे दिमाग में चल रहे हैं। लेकिन मैं किसी का नाम लेकर कॉन्ट्रोवर्सी क्रिएट करना नहीं चाहती। वहीं जब सिद्धार्थ और परिणीति से पूछा गया कि अगर कभी उनकी जबरदस्ती शादी कराई जाए तो क्या वह उस शादी को मानेंगे? जवाब में सिद्धार्थ कहते हैं नहीं, मुझसे कोई जबरदस्ती नहीं कर सकता। मैं अपनी जबरदस्ती शादी होने नहीं दूंगा। परिणीति का जवाब था, कोई भी चीज अगर जबरदस्ती थोपी जाए, तो उसे कभी एक्सेप्ट ही नहीं किया जा सकता। वह अपने साथ किसकी जबरिया जोड़ी बनाना चाहेंगे, इसके जवाब में सिद्धार्थ ने कहा, मेरी जोड़ी परिणीति के साथ ही अच्छी लगती है। इसलिए किसी और के बारे में नहीं सोच सकता।

5 साल बाद साथ आए सिद्धार्थ और परिणीति: सिद्धार्थ और परिणीति की जोड़ी हंसी तो फंसी के दौरान काफी पसंद की गई थी। ऐसे में उनसे पूछा गया कि उन्होंने साथ आने में इतना लंबा समय क्यों लिया, तो परिणीति कहती हैं, सिद्धार्थ और मुझे हंसी तो फंसी में काफी पसंद किया गया था। उसके बाद ऑफर्स तो कई आए थे, लेकिन हम दोनों कुछ ऐसा करना चाहते थे, जो दोबारा वही ना लगे। यही वजह है कि हमें आने में पांच साल लग गए। मैं दावे के साथ कह सकती हूं कि इस फिल्म में आप हमारी कैमिस्ट्री एक नए अंदाज में देखेंगे।

किचन में चॉपिंग बोर्ड होना है जरूरी, देखें खरीदने के टिप्स

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

चॉपिंग बोर्ड किचन के लिए बेहद जरूरी टूल है। इससे आपकी कुकिंग की तैयारी कितनी आसान होती है, इस बात का अहसास आपको इसके इस्तेमाल के बाद ही हो सकता है। चॉपिंग बोर्ड खरीदना जितना आसान दिखता है दरअसल उतना होता नहीं है। आपको इसके लिए कुछ बातों का ध्यान रखना बेहद जरूरी है।

चॉपिंग बोर्ड के बारे में सोचते ही सबसे पहले लकड़ी के बने चॉपिंग बोर्ड दिमाग में आते हैं। हालांकि प्रफेशनल शेफ्स टिकाऊ और अच्छी प्लास्टिक का बना हुआ कटिंग बोर्ड लेने की सलाह देते हैं।

अगर साइज की बात करें तो आपके किचन काउंटर पर जो बड़े सा बड़ा चॉपिंग बोर्ड फिट हो उसको लें। इससे सब्जियां गिरने और मिलने का डर नहीं रहेगा। बांस के चॉपिंग बोर्ड काफी पॉप्युलर हैं। ये इको-फ्रेंडली होते हैं साथ ही इनको रियूज भी किया जा सकता है। हालांकि इनमें चाकू जल्दी खराब होने का डर रहता है।

लकड़ी और बांस के कटिंग बोर्ड बेस्ट हैं लेकिन अगर नॉनवेज या मीट वगैरह कट करना है तो इसके लिए लकड़ी के कटिंग बोर्ड रखें।

इनको साफ करने में भी कुछ बातों का ध्यान दें जैसे प्लास्टिक के कटिंग बोर्ड को साफ करने के लिए बेकिंग सोडा और नमक पानी में मिलाकर साफ करें। इन्हें गर्म पानी से भी धो सकते हैं। वहीं लकड़ी के कटिंग बोर्ड पर नमक डालकर नींबू रगड़ दें। पांच मिनट बाद इसको स्क्रब करके गीले स्पंज से साफ करें। बांस के कटिंग बोर्ड को गुनगुने पानी से धोएं, हल्के हाथ से रब करें फिर सूखने पर ऑइल लगाकर रख दें।

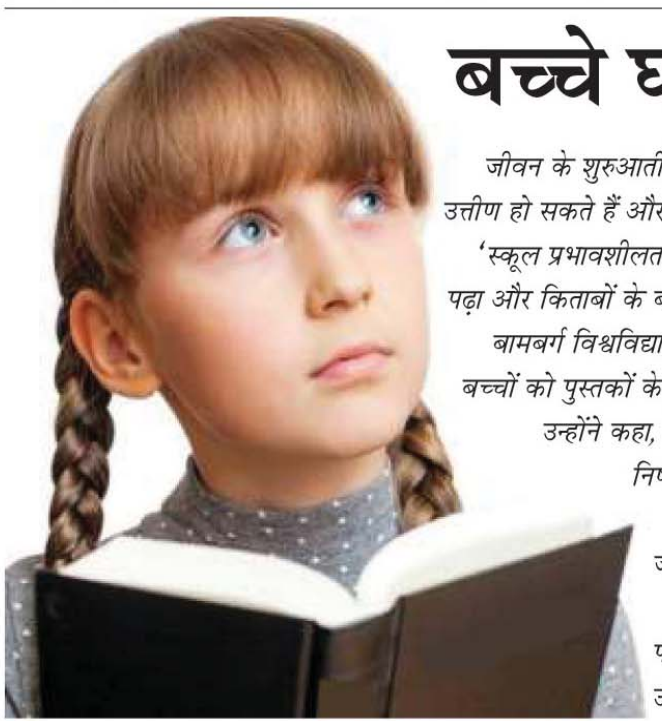

बच्चे घर में जल्दी सीखकर सुधार सकते हैं श्रेणी

जीवन के शुरुआती सालों में ही यदि बच्चों को घर में पढ़ाई के लिए अच्छा माहौल मिल जाए, तो वे होम लर्निंग के माध्यम से भविष्य में अच्छी श्रेणी में उत्तीण हो सकते हैं और पढ़ाई में बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। एक शोध में यह बात सामने आई है।

'स्कूल प्रभावशीलता और स्कूल सुधार' में प्रकाशित शोध में यह बात सामने आई है कि जिन बच्चों के माता-पिता ने स्कूल भेजने से पहले ही बच्चों के साथ पढ़ा और किताबों के बारे में बात की, वे सभी 12 साल की उम्र में गणित के विषय में अच्छे अंक लेकर आए।

बामबर्ग विश्वविद्यालय हुए शोध के प्रमुख लेखक सिमोन लेहरल ने कहा, ''हमारे परिणाम न केवल साक्षरता, बल्कि संख्यात्मकता में भी विकास के लिए बच्चों को पुस्तकों के लिए उजागर करने के महान महत्व को रेखांकित करते हैं।''

उन्होंने कहा, ''प्रारंभिक भाषा कौशल न केवल एक बच्चे के पढने में सुधार करते हैं, बल्कि उसकी गणितीय क्षमता को भी बढ़ाते हैं।''

निष्कर्ष के लिए शोधकर्ताओं ने 229 जर्मन बच्चों का तीन साल की उम्र से लेकर माध्यमिक विद्यालय तक अध्ययन किया।

प्रतिभागियों की साक्षरता और संख्यात्मक कौशल का परीक्षण उनके तीन साल के पूर्वस्कूली (उम्र 3-5) में किया और दूसरी बार फिर जब वे 12 या 13 वर्ष के हुए तब यह परीक्षण किया गया।

उन्होंने पाया कि बच्चों ने अपने पूर्वस्कूली वर्षों में साक्षरता, भाषा और अंकगणितीय कौशल घर के प्रोत्साहन से प्राप्त किया, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने इसके बाद घर में सीखने के माहौल की परवाह किए बिना माध्यमिक विद्यालय में पढने और गणितीय कौशल में उच्च परिणाम प्राप्त किए।